# ''पितरेश्वर मुक्ति साधना''

**क्या आपके घर में छायायें दिखाई देती हैं? क्या घर में हर समय अशांति बनी रहती है? क्या आपके स्वप्न में आपके पूर्वज आते हैं? तो निश्चित जानिए आपके परिवार में आपके कोई पूर्वज की आत्मा भटक रही है, आपका परिवार पितृदोष से युक्त हैं उसका समाधान है:**

हमारा कोई प्रिय आत्मीय, जो कालचक्र में विवश होकर हमसे बिछड़ गया हो, उसके स्मरण, उसके प्रति भावना और श्रद्धा के अतिरिक्त हम कर भी क्या सकते हैं? मृत्यु के पश्चात् हमारा और उसका सम्बन्ध विच्छेद केवल दैहिक स्तर पर होता है, आत्मिक स्तर पर नहीं और तब हमारा दायित्व पहले से अधिक बढ़ चुका होता है, क्योंकि तब तो यह इस भौतिक देह के अभाव में अनेक ऐसे कार्य और कर्त्तव्य करने में असमर्थ हो जाता है, जो कि अन्यथा कर सकता, जबकि हमारे पास ईश्वर प्रदत्त यह स्थूल देह है, जिसका हम न केवल अपने लिए अपितु अपने आत्मीय के लिए भी उपयोग कर सकते हैं। यह उपयोग में लेना इस प्रकार से संभव है कि उसकी आत्मा की शांति के लिए निर्धारित विधि-विधानों को पूर्ण कर, तर्पण दान देकर उसे भी निम्न कोटि की योनियों से निकाल कर पितृ वर्ग में ले जायें, जहां वे उच्चता और श्रेष्ठता से आसीन हो स्वयं भी तृप्त हों एवं हमारे लिए भी सहायक भी बने, उनका आशीर्वाद और कृपा हमें प्राप्त हों।

हमारे प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' में पितृवर्ग का उल्लेख सम्मानपूर्वक करते हुए उन्हें देवताओं के समकक्ष व उन्हीं के समान सोमपान करने वाला बताया गया हैं। 'ऋग्वेद' में ही पितृ वर्ग के तीन भेद मिलते हैं यथा अवर, मध्यम और पर वे केवल पूज्यनीय ही नहीं माने गये वरन् मांगलिक अवसरों पर उनका आह्वान और उनसे आशीर्वाद प्रदान करने की प्रार्थना का उल्लेख भी वेदों में मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि पितृ वर्ग वास्तव में मनुष्य के लिए ऐसा वर्ग होता है, जो उसकी सभी मनोकामना पूर्ति में देववर्ग के समान ही होता है। प्रायः देववर्ग से भी अधिक प्रभावशाली, क्योंकि वह व्यक्ति विशेष से सीधे एवं रक्त द्वारा सम्बन्धित जो होता है।

## आपको क्या करना है?–

इस वर्ष पितृपक्ष संवत् 2076 भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा दिनाँक 1 सितम्बर 20, मंगलवार से आरम्भ होगा एवं आश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी दिनाँक 17 अक्टूबर 2020, गुरूवार को समाप्त होगा। गया में सम्पन्न किये जाने वाले जिस तर्पण का उल्लेख ऊपर किया गया वह 15 के स्थान पर 17 दिनों का माना जाता है, अर्थात् पितृ पक्ष प्रारम्भ होने से एक दिन बाद तक। इस विशिष्ट तर्पण को चार भागों में बांट कर किया जाता है- देवतर्पण, ऋषितर्पण, यमतर्पण एवं पितृतर्पण।

आकस्मिक, दुर्घटना में मृत्यु होने के अतिरिक्त भी कुछ दुःखद दशायें मानव जीवन एवं परिवार में घट जाती है, जैसे मृतक व्यक्ति का पता न चला हो, वह नदी या समुद्र में डूब गया हो और उसका शव न मिला हो, या ऐसी कोई अन्य दुःखद दशा जिसमें व्यक्ति का अंतिम संस्कार या तो हो ही न पाया हो अथवा आधे अधूरे ढंग से हुआ हो, बिना शास्त्रोक्त नियमों का पालन किए सम्पन्न किया गया है, इस स्थिति में भी व्यक्ति मृत्यु के पश्चात् दुःखी और संतप्त भटकता रहता है। ऐसी समस्त अप्रिय स्थितियों के निवारण के लिए 'गारूडेय तंत्र' नामक ग्रन्थ में एक विधि प्राप्त हुई है, जिसे केवल पितृ पक्ष के दिनों में ही सम्पन्न कर मृतक आत्मा को मुक्ति प्रदान की जा सकती है। पितृपक्ष केवल सामान्य रूप से ब्राह्मण भोजन कराकर, श्राद्ध क्रिया सम्पन्न पितृवर्ग एवं दिन ही नहीं वरन इन्हीं दिनों में समस्त पितृवर्ग एवं जिनकी प्राकृतिक मृत्यु हुई हो उनके लिए भी इस प्रयोग को सम्पन्न करना अति आवश्यक है, क्योंकि इस प्रकार से व्यक्ति अपने पूर्वजों की कृपा और पारिवारिक स्थितियों में श्रेष्ठता प्राप्त करने की स्थितियाँ निर्मित कर लेता है। वास्तव में किसी भी मृतक पूर्वज के लिए सबसे उपयुक्त श्राद्ध का अर्थ तो यही है कि उसे निरन्तर योनियों से सप्रयास मुक्ति दिलायी जाय, उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया जाय, उसको भावनात्मक रूप से तृप्ति दी जाय तथा इस भांति पितृ ऋण से मुक्ति प्राप्त की जाय।

## साधना विधि–

इस विधि की विशेषता यह है कि इसे साधक घर पर ही सम्पन्न कर अपने मृत आत्मीय को निश्चय पूर्वक मुक्ति प्रदान कर सकता है। पितृ पक्ष के प्रथम दिवस अर्थात् दिनांक 1 सितम्बर से प्रारम्भ होने वाली साधना को परिवार का कोई भी सदस्य जो व्यस्क हो, सम्पन्न कर सकता है, फिर भी पुरूष वर्ग ही इस साधना को सम्पन्न करें तो अधिक उचित होगा, यथासंभव परिवार की स्त्री या अल्प व्यस्क बालक इसे सम्पन्न न करें। रात्रिकालीन इस साधना में साधक सफेद रंग के वस्त्र धारण कर, काले रंग के ऊनी आसन पर दक्षिणाभिमुख होकर बैठे तथा सामने

काले रंग के वस्त्र को बाजोट पर बिछा कर लोहे के पात्र में पितृदोष निवारण यंत्र को स्थापित कर सम्मानपूर्वक तेल में सिन्दूर घोल कर अर्पित करे, काले तिल, अक्षत, जौ, व लाल रंग के पुष्प चढ़ायें तथा यंत्र के चारों ओर चार 'चार मुखी रूद्राक्ष' स्थापित कर उनका सामान्य पूजन करें। इस सम्पूर्ण पूजन सामग्री में चारों ओर काजल से एक घेरा बना लें तथा एक ओर तेल का बड़ा-सा दीपक जला कर, सम्मानपूर्वक 'समस्त पूर्वजों, पितृवर्ग, एवं मातृवर्ग में जो भी पूर्वज अतृप्त रह गये हों, उनकी मुक्ति के लिए मैं उनका वंशज यह साधना सम्पन्न कर रहा हूँ, कहकर संकल्प लें। पन्द्रह दिनों की इस साधना में जिसका समापन अमावस्या को होना है, यथासंभव प्रतिदिन एक निश्चित समय पर ही साधना सम्पन्न करें। इस साधना में केवल 'पितृेश्वर माला' का ही प्रयोग मंत्र जप में किया जाता है।

**मन्त्र- ।। ॐ ऐं पितृदोष शमनं ह्रीं स्वधा।।**

इस साधना में जिस दुर्लभ मंत्र का उल्लेख मुझे गारूडेय तंत्र की प्राचीन व हस्तलिखित प्रति में मिला उनको मैंने ऊपर स्पष्ट किया है। इस मंत्र का प्रतिदिन केवल 11 माला ही मंत्र जप करना पर्याप्त है। साधना समाप्ति के बाद अर्थात् अमावस्या की रात्रि में ही समस्त माला यंत्र आदि को काले कपड़े में बांधकर शिव मन्दिर में रख दें। पन्द्रह दिवसीय इस साधना को करने के उपरान्त साधक स्वयं अनुभव करता है कि उसके मन मस्तिष्क पर छाया कोई दबाव हट गया है तथा वह पहले की उपेक्षा अधिक प्रसन्न रहने लगा है।

इस साधना के उपरान्त भी साधक अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान भाव बनाये रखें तथा जब भी कोई आकस्मिक संकट की स्थिति उसके जीवन में आये तो उपरोक्त मंत्र का केवल 11 बार जप करें। उनका सूक्ष्म रूप में आवाहन कर उनसे संकट मुक्ति की प्रार्थना करें। आपके पूर्वज तो आपके ही होते हैं, वे क्यों नहीं आपके सहायक और सहयोगी होंगे यदि आप उनका स्मरण और चिंतन सदैव सम्मानपूर्वक एवं आत्मीय ढंग से करते रहेंगे।

**साधना सामग्री न्यौछावर- 2100/- रू.**

♦♦♦


# शनि पीड़ा से निवारण

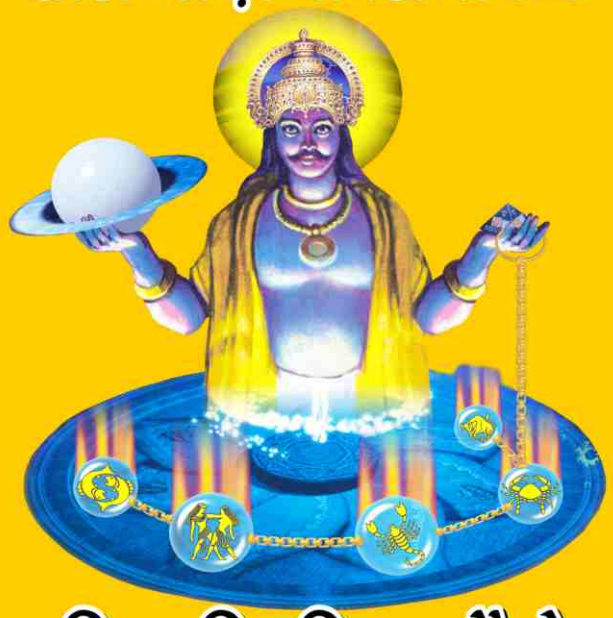

## शनि शान्ति विधान पैकेट

शनि की महिमा बड़ी निराली है। शनि नाम है पीड़ा का, दुःख का। लेकिन वहीं शनि भौतिक सुखदाता भी है। शनि भाग्य बिगाड़ता है तो संवारता भी है। सूर्यपुत्र शनिदेव जिनके पराक्रम से मनुष्य तो क्या देवता भी घबराते हैं। शनि यदि प्रसन्न हो जाये तो रंक को राजा बना दे और क्रुद्ध हो जाये तो राजा को रंक। आईये! शनि जयन्ती पर हम भी शनि देव को प्रसन्न कर शनि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त करें।

याद रखिये! सौभाग्यशाली अवसर बार-बार नहीं आते।

**शनि शान्ति विधान पैकेट में आप पायेंगे**

1.शनि पुरुषाकार यंत्र 2. शनि माला 3.शनि तैतीसा यंत्र+महामृत्युंजय यंत्र 4.पुतला छत पर लटकाने के लिये 5. घोड़े की नाल 6.शनि का छल्ला 7.पारद शिवलिंग 8.शनि यंत्र पिरामिड 9.शनि शान्ति के मंत्र-स्तोत्र-अष्टक आदि की पॉकेट पुस्तक 10.शनि से संबंधित उपायों की सी.डी.।

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

**HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331**

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

**सभी सामग्री एक साथ मात्र 3500 रू में**

## त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291-2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org

# पारद दक्षिणावर्ती शंख

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रूप होने के कारण सभी देवी-देवताओं के द्वारा वंदनीय एवं स्पृहनीय है। पारद धातु अपने आप में पूर्णता का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति और धर्म में शंख का बड़ा महत्त्व है। विष्णु के चार आयुधों में शंख को भी एक स्थान मिला है। मन्दिरों में आरती के समय शंखध्वनि का विधान है तथा प्रत्येक तान्त्रिक पूजा में शंख के द्वारा अभिषेक का महात्म्य है। शंख के दर्शन मात्र से सभी पाप ऐसे नष्ट हो जाते है। यह दक्षिणावर्त शंख जिसके घर में रहता है वहाँ मंगल ही मंगल होते हैं, लक्ष्मी स्वयं स्थिर निवास करती हैं। पारद शंख की स्थापना से निश्चय ही धनागम में वृद्धि होती है तथा सम्पूर्ण जीवन में कभी धनाभाव नहीं होता।

जब श्रीकृष्ण ने द्वारिका नगरी बसाई तो पहले उन्होंने वास्तुशास्त्र के आधार पर यह सुनिश्चित किया कि नगरी का आकार शंख की भांति हो और नगर में समृद्धि तथा सम्पन्नता हो, इसलिए उन्होंने स्वयं पारद शंख-साधना सम्पन्न की, तभी द्वारिका नगरी अपने समय में सबसे धनी नगरों में सर्वोच्चता पर थी। धन, धान्य, अन्न, आभूषणों, रत्नों, भव्य प्रसादों से पूर्ण यह नगरी इन्द्रलोक के आकर्षण को भी धूमिल कर देती थी। ऐसी ही समृद्धि प्रदान करता है, यह 'पारद शंख', जिसका पूर्ण लाभ किसी भी बुधवार अथवा पुष्य नक्षत्र पर प्राप्त किया जा सकता है।

**पारद दक्षिणावर्ती शंख न्यौछावर 2100/-**

सम्पर्क करें:- **विश्व तंत्र ज्योतिष**

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर-342001(राज.)
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.fameandfortune.org